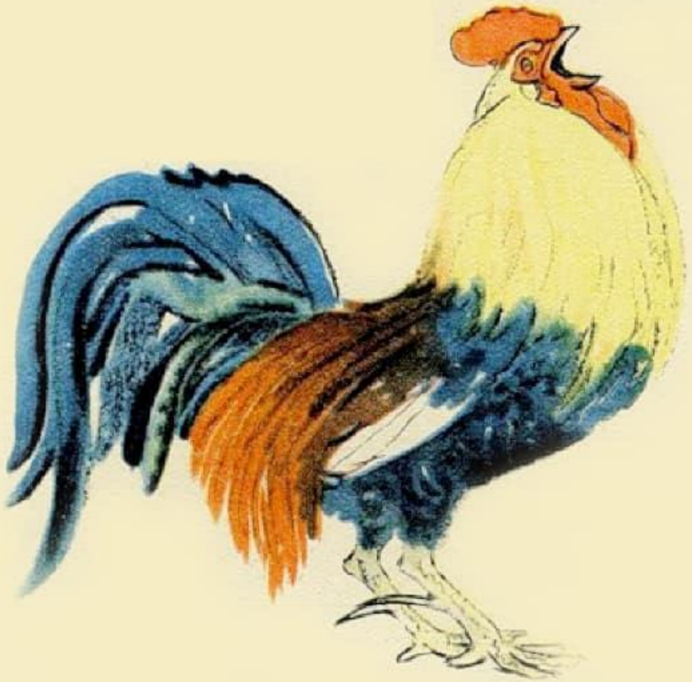
सुनहरा मुर्गा

रूसी परी कथा





सुनहरा मुर्गा

रूसी परी कथा

चित्र

एवगेनी राचेव



एक समय की बात है, एक बिल्ली, एक थ्रश (पक्षी) और एक सुनहरी कंघी वाला मुर्गा एक-साथ रहते थे। वे जंगल में एक छोटे से घर में साथ-साथ रहते थे। जब बिल्ली और थ्रश जंगल में लकड़ी काटने जाते थे, तब मुर्गा घर पर अकेला रह जाता था।

जाने से पहले वे मुर्गे को हमेशा सख्त निर्देश देते थे:

"हम बहुत दूर जा रहे हैं, और तुम्हें घर पर ही रहकर नज़र रखना। आवाज़ मत करना, और अगर लोमड़ी आ जाए, तो खिड़की से बाहर मत देखना।"

लोमड़ी को पता चला कि बिल्ली और थ्रश बाहर गए हैं, इसलिए वह छोटे से घर में भागी, खिड़की के नीचे बैठ गई और गाने लगी:

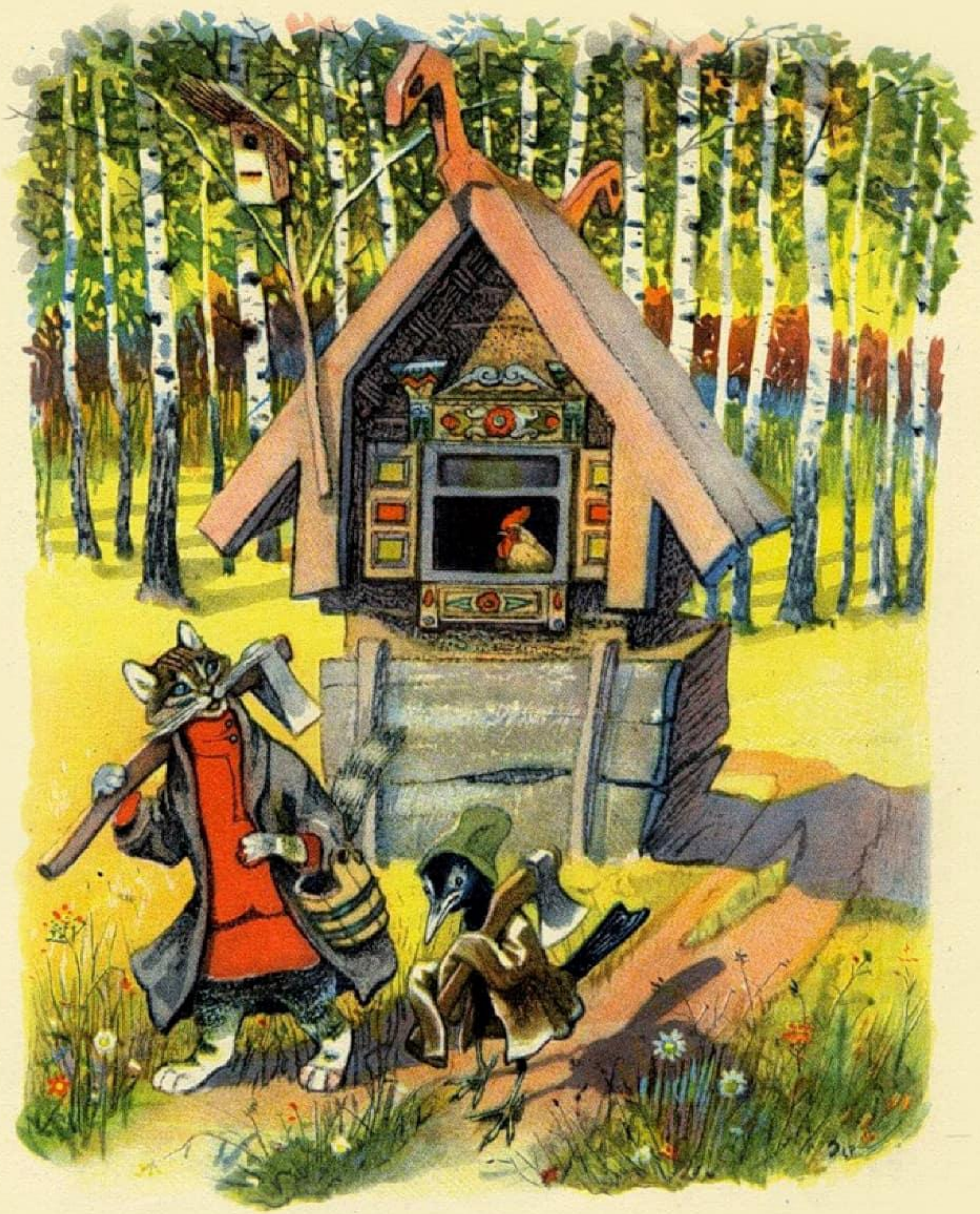
"मुर्गे, मुर्गे,
सुनहरी कंघी,
मक्खनी सिर,
रेशमी दाढ़ी,
खिड़की के बाहर देखो,
मैं तुम्हें कुछ मटर दूंगी।"

मुर्गे ने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला और लोमड़ी ने उसे तुरंत अपने पंजों से पकड़ लिया और अपनी मांद में ले गई।

मुर्गा जोर से चिल्लाया:

"लोमड़ी मुझे ले जा रही है
अंधेरे जंगलों से होकर,
तेज़ नदियों के पार,
ऊंचे पहाड़ों पर...
बिल्ली और थ्रश, मुझे बचाओ!"

बिल्ली और थ्रश ने उसे सुना, पीछा किया और मुर्गे को लोमड़ी से बचा लिया।



एक और बार, बिल्ली और थ्रश लकड़ी काटने के लिए जंगल में गए और फिर से उन्होंने मुर्गे को चेतावनी दी:

"सुनो, मुर्गे, खिड़की से बाहर मत देखना। इस बार हम और भी दूर जा रहे हैं, और हम तुम्हारी आवाज़ नहीं सुन पाएंगे।"

वे चले गए, और लोमड़ी घर वापस आई और गाने लगी:

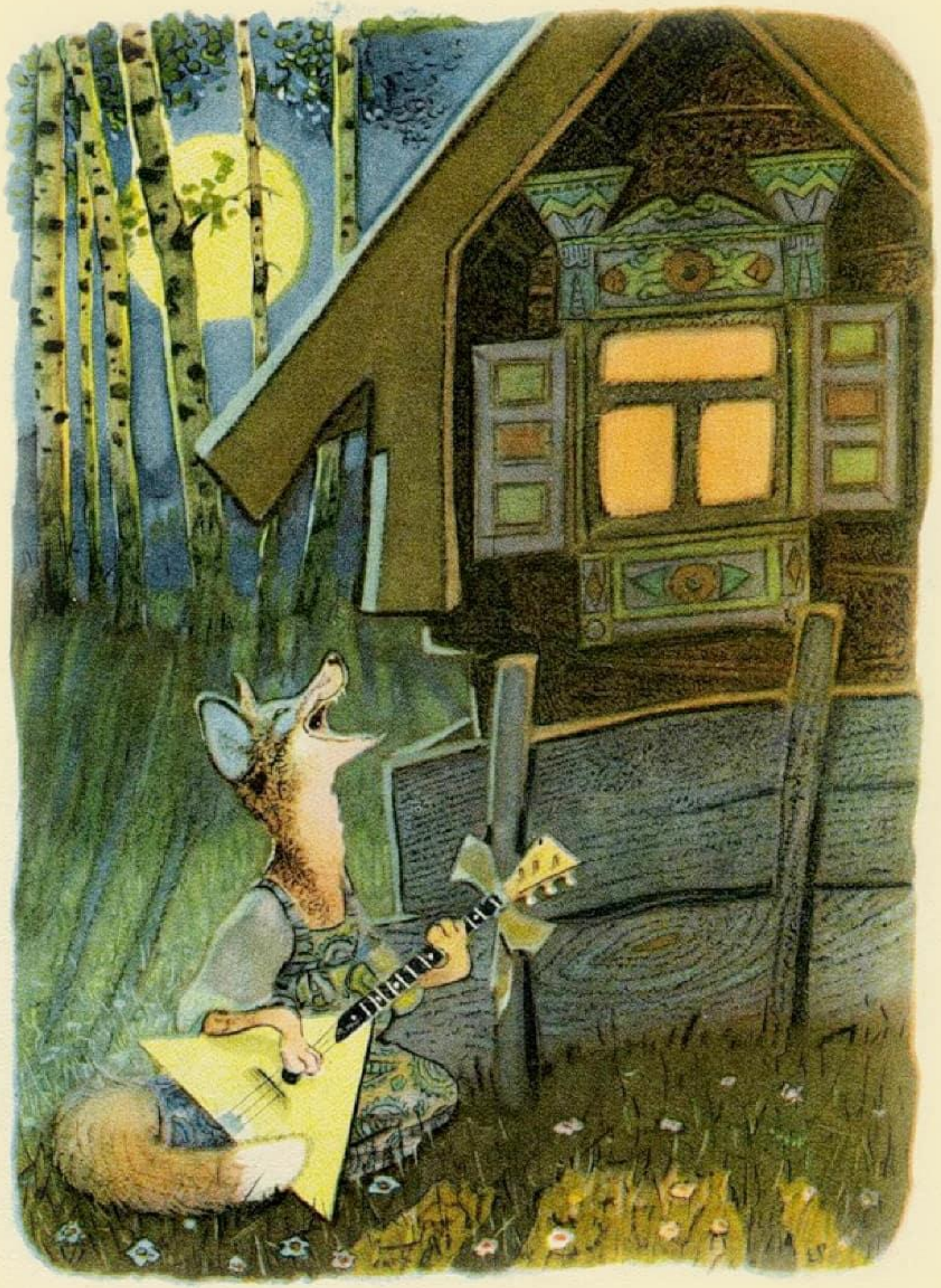
"मुर्गे, मुर्गे,
सुनहरी कंघी,
मक्खनी सिर,
रेशमी दाढ़ी,
खिड़की के बाहर देखो,
मैं तुम्हें कुछ मटर दूंगी।“

मुर्गा चुप रहा। लेकिन लोमड़ी ने फिर से गाया:

"बच्चे दौड़ रहे हैं,
गेहूँ बिखेर रहे हैं,
मुर्गियाँ चोंच मार रही हैं,
लेकिन मुर्गे को कुछ नहीं मिलेगा...“

मुर्गे ने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला:

"कुकड़ू-कूं! मुर्गे को कैसे कुछ नहीं मिलेगा?"



लोमड़ी ने उसे अपने पंजों से पकड़ लिया और अपनी मांद में ले गई।

मुर्गे ने चिल्लाकर कहा:

"लोमड़ी मुझे ले जा रही है
अंधेरे जंगलों से होकर,
तेज़ नदियों के पार,
ऊंचे पहाड़ों पर...
बिल्ली और थ्रश, मुझे बचाओ!"

बिल्ली और थ्रश ने उसे सुना, और उसका पीछा किया। बिल्ली भागी; थ्रश उड़ी... उन्होंने लोमड़ी को पकड़ लिया—बिल्ली ने उसे खरोंचा, थ्रश ने उसे चोंच मारी, और उन्होंने फिर से मुर्गे को बचा लिया।

कुछ समय बाद, बिल्ली और थ्रश एक बार फिर से लकड़ी काटने के लिए जंगल में गए। इस बार जाने से पहले, उन्होंने मुर्गे को कड़ी चेतावनी दी:

"लोमड़ी की बात मत सुनना, खिड़की से बाहर मत देखना। इस बार हम और भी आगे जा रहे हैं, और हम तुम्हारी आवाज़ नहीं सुन पाएंगे।"

वे लकड़ी काटने के लिए जंगल में अंदर चले गए। और लोमड़ी फिर से आई: वह खिड़की के नीचे बैठी और गाने लगी:

"मुर्गे, मुर्गे,
सुनहरी कंघी,



मक्खनी सिर,
रेशमी दाढ़ी,
खिड़की के बाहर देखो,
मैं तुम्हें कुछ मटर दूंगी।“

मुर्गा चुप रहा। लेकिन लोमड़ी ने फिर गाया:

"बच्चे दौड़ रहे हैं,
गेहूँ बिखेर रहे हैं,
मुर्गियाँ चोंच मार रही हैं,
लेकिन मुर्गे को कुछ नहीं मिलेगा...“

मुर्गा फिर भी चुप रहा। लेकिन लोमड़ी ने एक बार फिर गाया:

"लोग भाग रहे हैं,
मेवे बिखेर रहे हैं,
मुर्गियाँ चोंच मार रही हैं,
लेकिन मुर्गे को कुछ नहीं मिलेगा...“

मुर्गे ने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला:

"मुर्गे को कुछ नहीं मिलेगा!
मुर्गे को कैसे कुछ नहीं मिलेगा?"



लोमड़ी ने उसे अपने पंजों से पकड़ लिया और अपनी मांद में ले गई अंधेरे जंगलों से होकर, तेज़ नदियों के पार, ऊंचे पहाड़ों पर...

मुर्गा बहुत रोया और जोर से चिल्लाया, लेकिन बिल्ली और थ्रश ने उसे नहीं सुना। और जब वे घर लौटे, तब तक मुर्गा जा चुका था।

बिल्ली और थ्रश ने लोमड़ी के निशानों का पीछा किया। बिल्ली भागी; थ्रश उड़ी... फिर वे लोमड़ी की मांद तक पहुँचे। बिल्ली ने एक छोटी सी वीणा निकाली और उसे बजाना शुरू किया:

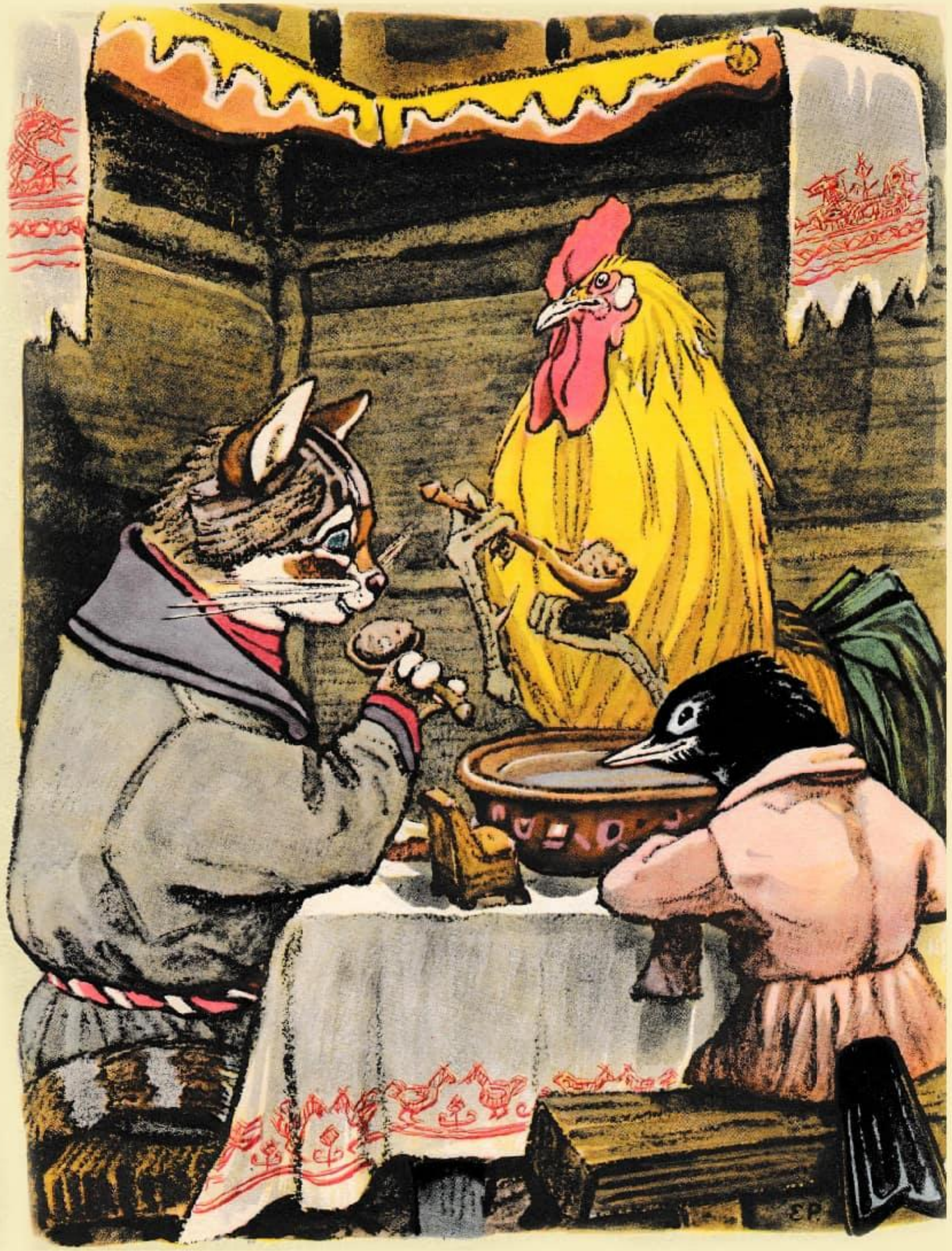
"प्लिंक, प्लोंक, छोटी वीणा,
सोने के तार...
क्या लोमड़ी महारानी घर पर है?
अपने आरामदायक छोटे से घर में?"



लोमड़ी ने सुना और सोचा:

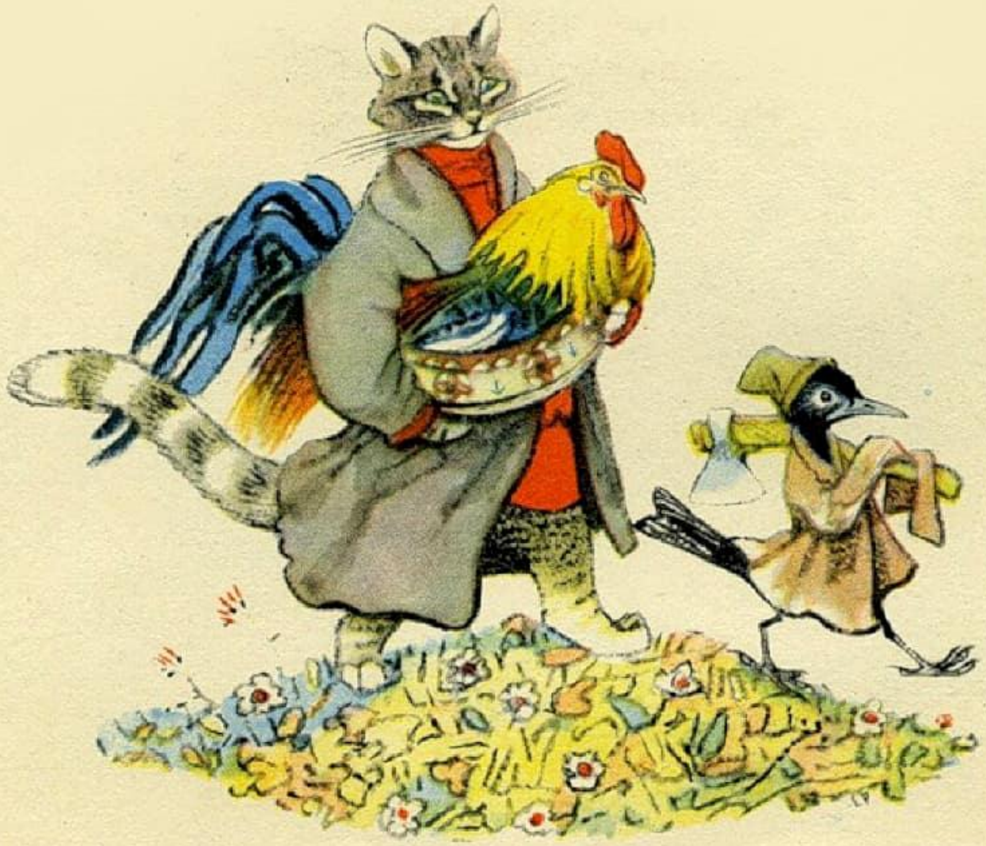
"देखूं कौन इतनी मधुर वीणा बजा रहा है
और इतना सुंदर गा रहा है।"

जैसे ही वह अपनी मांद से रेंगकर बाहर आयी उसे तुरंत बिल्ली व थ्रश ने उसे पकड़ लिया। उन्होंने उसे तब तक पीटा, जब तक वह टांगों के बीच अपनी दुम को दबाकर भाग नहीं गयी।



फिर उन्होंने मुर्गे को उठाया, उसे एक टोकरी में रखा और घर ले आए।

और तब से वे अब तक खुशी-खुशी रहते हैं।



सुनहरा मुर्गा

रूसी परी कथा

Edited by Evgeny Spirin
Layout by Arvind Gupta, Evgeny Spirin
International project:
"Mini Progress and Mini Raduga"